478
H 10m P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1176
10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 478

19-1

गोपाल ग्रन्थ-माला का तीसरा रत्न

Part II

ख़ूनी ग़ज़लें

२

प्रकाशक

राष्ट्रीय सरस्वती सदन, कानपुर

गोपाल ग्रंथ—माला का तीसरा रत्न

खूनी ग़ज़लें।

द्वितीय भाग

संग्रहीता—

सिद्धगोपाल शुक्ल

विगहपुर उन्नाव।

प्रकाशक

राष्ट्रीय सरस्वती सदन,

चावल मंडी, कानपुर।

प्रथम बार 2000 } १९२३ ई० { मूल्य -)॥

891.431
Sh91K

आरोग्यता के लिये फायदेमन्द—

दिल को खुश करने वाली चीजें इस्तेमाल करो

पान शृङ्गार गोली—आप पानमें ज़रूर खाइये इसमें तम्बाकू नहीं है
पान शृङ्गार गोली—से पान की लज्ज़त बढ़ जाती है।
पान शृङ्गार गोली—पान में खाने से मुंह खुशबू से भर जाता है
पान शृङ्गार गोली—हमेशा पानमें खाने से खाँसी कभी नहीं आती
पान शृङ्गार गोली—पाचन करती, और भूख को बढ़ाती है
पान शृङ्गार गोली—बदन की बादी को हटाकर ताक़त बढ़ाती है
पान शृङ्गार गोली—मुंह के जायके को सुधारती है।
पान शृङ्गार गोली—से जी का मचलना दूर होता है।
पान शृङ्गार गोली—से डकार के साथ मुंहसे खुशबू उड़ती है।
पान शृङ्गार गोली—पानकी पीक को गाढ़ी करती है।
पान शृङ्गार गोली--की खुशबू मुंह में बहुत देर तक रहती है
पान शृङ्गार गोली--कोकीन व तम्बाकू को छुड़ाती है।
पान शृङ्गार गोली--खुशकी को दूर करके तरावट लाती है।
पान शृङ्गार गोली—में अवगुण करने वाली कोई चीज़ नहीं है।

मूल्य फी शीशी (५५० गोली) १) डाक व्यय अलग

पान शृङ्गार मसाला।

खुशबू व लज्ज़त में पान शृङ्गार गोलियों के ही माफिक है मूल्य फी शीशी (२ औंस मसाला) १।=) एक रुपया छः आना, बड़ी शीशी (४ औंस मसाला) २॥) दो रूपया आठ आना महसूल डाक अलग।

नोट--बयापारियों के थोक आर्डर पर ≈) ≈) ।) ॥) वाली शीशियां भर कर आर्डर आने पर कारखाने से भेजी जाती हैं। ज़ियादा आर्डर पर काफी कमीशन भी दिया जाता है।

पताः-- कारखाना "पान शृङ्गार मसाला" कुरसवां, कानपुर

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 478
Date 10.12.71
GOVT. OF INDIA

वंदे मातरम् ।

खूनी गज़लें ।

द्वितीय भाग ।

स्वदेशी— १

भारत के दिन फिरेंगे, प्रचार दो स्वदेशी ।
ब्यापार हो स्वदेशी, बाज़ार हो स्वदेशी ॥
है अपनी चीज अपनी, चाहे बुरी भली हो ।
दिल से पसन्द हम को, हर बार हो स्वदेशी ।
दिल पर स्वदेश भक्ती, का रंग होगा गाढ़ा ।
जब ज़ेब तन हो खद्दर दस्तार हो स्वदेशी ॥
नक्काल मत रहो अब, भित्रो बज़ा बदल दो ।
रफ्तार हो स्वदेशी, गुफ्तार हो स्वदेशी ॥
फिर भी बना दिखादो ढाके की वैसी मलमल ।
फिर खार हो स्वदेशी, गुलज़ार हो स्वदेशी ॥
यह है निशां फतह का, हासिल स्वराज्य होगा ।
ऐ दोस्तो गले का, जब हार हो स्वदेशी ॥

देबी चरण मुनीम ।

कैसा है २

हमें क़ैदी बनाने के लिए तैयार कैसा है।
ज़रा देखो हुआ सैय्याद भी अय्यार कैसा है॥
गिरा कर लोभ के दाने बिछाया जाल है हरसू।
फँसे हम आप फँदे में कहो हुशियार कैसा है॥
पढ़ाता है हमेशा यह हमें बेसूद की पट्टी।
भरा है बुग्ज़ सीने में अजी बदकार कैसा है॥
हमें अब चाल में इसकी नहीं आना मुनासिब है।
कसाई का कहीं दुनियां में रहमो प्यार कैसा है॥

श्री० लाल

ग़ज़ल २

कर सकें तारीफ़ क्या ज़ालिम तेरे बेदाद की।
कौन सुनता है सदा अब आशिके नाशाद की॥
कर चुके मक़तल में आंखें ही दिखा कर कत्ल वो।
दे गई है काम खन्जर का नज़र जल्लाद की॥
छोड़ दो ऐ हिन्द वालो ग़ैर कपड़े छोड़दो।
सनअतो हरफ़त उन्हों ने हिन्द की बरबाद की॥
खाते हैं बेइज्जती से ठोकरें हरजा गुलाम।
आबरू है चश्म आलम में फ़क़त आज़ाद की॥
शुमये क़िस्मत से हमने कर लिया जिस पर यकीन।
अपनी तो मिट्टी उसी कमबख़्त ने बरबाद की॥

किस ग़ज़ब का है मेरे शौके सहादत का असर ।
उड़ गया मुँह फीकी रूह्त पड़ गई जल्लाद की ॥

भागीरथ लाल ।

ग़ज़ल ४

लुत्फ लाएगी कभी तासीर यह फरियाद की ।
भूल शेखी जायगी सारी कभी सैयाद की ॥
बेगुनाहों का जहां में कत्ल करना क्या सहल ।
हाथ से शमसीर खुद गिर जायगी जल्लाद की ॥
सल्तनत यों जुल्म की भी देर पा होती नहीं ।
देर तक टिकती नही ज्यों नीव बेबुनियाद की ॥
अब भला हम आपके क्या काम आएँगे जनाब ।
आपने मिट्टी हमारी ख़ूब ही बरबाद की ॥
देश के जयचंद हमको दे सकेंगे क्या मदद ।
हाँ खुदा ही तबका 'लाल' है इमदाद की ॥

श्री० लाल ।

ग़ज़ल ५

हुक्म दे ऐ सोजिये त जो मुझे नाशाद को ।
फूँकदूँ दम भर में मैं चर्ख़े सितम ईजाद को ॥
तुझ से बढ़ कर चाहता हूँ मैं तेरी बेदाद को ।
चूम लेता हूँ लिपट कर ख़ंजरे फौलाद को ॥

मुर्ग़ बुलबुल की ख़बर जिस दम हुई सैयाद को ।
खिल पड़ा गुल की तरह सुन कर मुबारक बाद को ॥
ना रसाई ने गला घोटा लबे फ़रियाद का ।
पै असर आजा ख़ुदा के वास्ते इमदाद को ॥
'आसी' यह बेज़ार की आहें न खाली जायँगी ।
बर्क़ बनकर फूँक देंगी खानए सैयाद की ॥

नरवदा प्रशाद बर्म्मा 'आसी'

ग़ज़ल ६

देखना है हिम्मते मरदाना किसके दिल में है ।
दे वतन पर जां दिलावार कौम इस महफिल में है ॥
जान जाने का नहीं खौफो खतर कुछ दिल में है ।
दम अटक अपना रहा अब ख़ंजरे कातिल में है ॥
इस कदर सरमाया दारों से परीशां लोग हैं ।
आज है हड़ताल इस मिल में तो कल उस मिल में है ॥
लुट गया सारा ख़ज़ाना बेबसी की राह में ।
क़ाफ़िला अब कौम का इफ़लास की मंजिल में है ॥
मर्दोज़न पीरो जवां क्या तिफ्ल भी जाते हैं जेल ।
उस सितमगर के सितम से सब की जाँ मुशकिल में है ॥
आके आख़िर तंग उसकी पालसी से चाल से ।
नर्म भी कहते हैं अबतो क्या धरा कौंसिल में है ॥
सर हथेली पर लिए बैठे हैं शैदाये वतन ।
शोर महशर से सिवा अब कूचये क़ातिल में ह ॥

टूट जाएँगी कफ़स की तीलियाँ सैय्याद यह ।
जिंदगी है दम अगर बाकी तने बिस्मिल में है ॥
सर करेंगे दम में मैंदां क़ौम के लख़्ते जिगर ।
क़ौम का सौदा है सर में क़ौम की धुन दिल में है ॥
है यकी एक दिन हमें गान्धी दिलायेगा स्वराज्य ।
क्या हुआ गर आज कल वह जेल की मंज़िल में है ॥
आरही है जेल के दीवारो दर से यह सदा ।
क़ौम के मजनू तेरी लैला इसी महमिल में है ॥
चलता है बेड़ा तेरा 'अख़्तर' अजब रफ़्तार से ।
आही पहुँचा अब नहीं बाक़ी कसर साहिल में है ॥

गजल ७

दिल जलों का ऐ सितमगर दिल जलाना छोड़दे ।
मिट रहे जो आपही उनको मिटाना छोड़दे ॥
दिन हमेशा हैं नहीं रहते किसी के एक से ।
आहो जारी सुन के मेरी अब सताना छोड़दे ॥
चाक करदे दिल भले ही तेरी धमकी से मगर ।
कौन बुजदिल है जो हुब्बे आशियाना छोड़दे ॥
बेवफाई करके हम से मुफ़्त में क्या पा लिया ।
डर खुदा से बेगुनाहों का खूं बहाना छोड़दे ॥
सब समझते हैं तेरी चालें ऐ बद अहद हम ।
दम दिलासा देके यूं बातें बनाना छोड़दे ॥

प्रभाकर

हम आज़ाद हैं । ८

फ़ख्र गो इस बात पर है, हिन्द की औलाद हैं, ।
पर गुलामी में फँसे हैं इस लिए बरबाद हैं ।
कब्र से देते सदा मकतूल जलियाँ बाग़ के,
हमवतन जो ज़ुल्म हम पर हैं हुए कुछ याद हैं ।
बे कुसूरों को सताते जो हुकूमत के लिए,
दादगर उनको कहें या यह कहें जल्लाद हैं ।
पर कतर कर छोड़ रक्खा है हमें सैय्याद ने
फिर तुम्हीं कह दो भला क्यों कर कहें हम शाद हैं ।
आएँगे मुतलक न बातों में कभी बन्दा नवाज़,
तिफ्ल मकतब अब नहीं कुछ हम हुए उस्ताद हैं ।
हिन्दू मुसल्मां में बहम क़ायम रहा यह इत्तहाद,
एक दिन तो देख लेना 'लाल' हम आज़ाद हैं ।

श्री० 'लाल' ।

ग़ज़ल ९

हो गया बेदम नहीं दम ख़ंजरे कातिल में है ।
सख़्त जानी से मेरी अब उसकी जां मुश्किल में है ॥
मेरा पैमाना रहा ख़ाली है पुर ग़ैरों के जाम ।
बू दुरंगी की बसी साक़ी तेरी महफिल में है ॥
एक मुद्दत से असीरी में है अब सैयाद हम ।
और आजादी की ख़्वाहिश कैद अपने दिल में है ॥

ज़ख़्म पर हैं ज़ख़्म खाए दाग पर खाए हैं दाग ।
अबतो एक गुलशन का नक्सा सीनए बिसमिल में है ॥
वाये-किस्मत हमसे बेचारों का कुछ चारा नहीं ।
रोज कहते ही रहे वह पेश बिल कौंसिल में है ॥
जाँ की उल्फत छोड़ कर शौके शहादत में चला ।
अब वतन का क़ाफिला उम्मीद की मंज़िल में है ॥
जिब्बह कर ज़ालिम न तड़पा यों ख़ुदा के वास्ते ।
आरज़ू अब सर के देने की दिले साइल में है ॥
मैं तो हूं तारा बना चरखे सख़ुन का दोस्तो ।
दिल में क्या "अख़्तर" मुनव्वर आंख के हर तिल में है ॥

गजल १०

बला से त मुझे मायूस आहे-नारसा करदे ।
नहीं मुमकिन दिले बेताब तर्के मुद्दआ करदे ॥
हमें सूली पै लटका दे हमें बे दस्तो पा कर दे ।
रवाना बेड़ियां पहिना के सूए जेल को कर दे ॥
मुहब्बत मादरे भारत की दिल से मिट नहीं सकती ।
सजाए-अन्डमन भी बानिए-जौरो जफा कर दे ॥
मसीहाई की हाजत है न कुछ फिक्रे सफा हरगिज़ ।
दिया है दर्द गर तूने तो इसको ला दवा कर दे ॥
न रंजो ग़म से बेकल हो सितम सहकर दुआ गो हो ।
दिलेदर्द आशना यारब मुझे ऐसा अता कर दे ॥

न जुरमाने से डरते हैं, न कुछ ग़म कैद का हमको।
कहेंगे हम खुदा लगती वो जो चाहे सज़ा करदे ॥
रज़ाकाराने कौमी बन गए हैं गैरक़ानूनी।
तू बे ख़ौफो ख़तर साक़ी देर मय ख़ाना वा करदे ॥
तड़ातड़ बेड़ियां हों मादर भारत की दम भर में।
हमीयत का हर एक हिंदी अगर कुछ हक अदा करदे ॥
किया भेड़ों ने मलियामेट चरकर खेत भारत का।
बयाँ यह हजरते ईसा से कोई माजरा कर दे ॥
हमें परवाह क्या गोरों की हम काले ही अच्छे है।
हमें आज़ाद अपने देश में परमात्मा कर दे ॥
फ़क़त इस वास्ते "दिनकर" का वह मुंह बंद करते हैं।
कहीं ऐसा न हो नाला से वह महशर बपा करदे ॥

ब्रह्मस्वरूप शर्म्मा "दिनकर"

गजल ११

नहो इन्सानियत का पास गर मौजूद ईन्सा में।
नहीं है फ़र्क फिर बाकी कोई इंसा में हैवाँ में ॥
रहें भारत में मिलजुल कर कि जैसे एक मा जाए।
इलाही ऐसी उलफत हो बहम हिंदू मुसलमां में ॥
हमारा नख्ले दिल मुरझा गया वादे मुख़ालिफ से।
क़फ़स में अब सैयाद राखे या गुलिस्ताँ में ॥
ग़ज़ब है अय मुसलमानों तुम अपनी आंख से देखो।
मुक़ामाते मुक़द्दस और दस्ते-नामुसलमां में ॥

निगेहबाँ बन के लूटा दिन दहाड़े खानए बेकस ।
सितम ढाए सितमगर ने न क्या २ बाग़े जलियाँ में ॥
ज़मीं गर्दिश में है हर वक्त दिल की बेकरारी से ।
असर देखा फ़लक तूने हमारी आहे सोजां में ॥
शुजाअत क्या इसी को तू समझ बैठा है ऐ बुज़दिल ।
चलाई बेकसों पर गोलियां जो बाग़े-जलियां में ॥
ज़रूरत तुझको है मजनूं तू जा सहरानवरदी कर ।
मेरे घर में वियाबाँ है, मैं क्यों जाऊँ बयाबाँ में ॥
यकीं हो किस तरह हमको तुम्हारी झूठी बातों का ।
कभी सच्चे भी निकले हो तुम अपने अहदे पैमां में ॥
मुचलके नेकचलनी के लिए जाते हैं क्यों हम से ।
हमें वह बेखता क्यों डालते हैं क़ैदे ज़िंदां में ॥
पशेमानी से पानी पानी हो जायेंगे अए "दिनकर" ।
ज़रा मुंह डाल कर देखें तो वे अपने गरीबाँ में ॥

ब्रह्मस्वरूप "दिनकर"

बुलबुल की फ़रियाद १२

क्या से क्या अब हाय अपना आशियाना हो गया ।
नाव के बरके मुसीबत का निशाना हो गया ॥
हाय क़स्सामे अज़ल ने रोज़ी जब तकसीम की ।
अपनी किस्मत में क़फ़स का आबदाना हो गया ॥
अब कहां है वह चमन वह गुल कहाँ वह दिल कहां ।
हो चुकी वह नग़मा सञ्जी वह तराना हो गया ॥
पर कटे हैं ताक़त परो अज बाज़ू में नहीं ।
लुत्फ़ के वह दिन गये अब वह ज़माना हो गया ॥

छोड़दे सैय्याद जालिम अब मैं तनहा क्या करूँ ।
काफ़िला सबरो तहम्मुल का रवाना होगया ॥
लुत्फ आज़ादी की अबतो याद तक दिल में नहीं ।
मुद्दतें गुजरी कफस में एक जमाना हो गया ॥

लीडर १३

गो लाख होशियार हूं और जी-शऊर हूं ।
देशो धरम के काम से रहता मैं दूर हूं ॥
मंदिर सभा समाज में जाता नहीं कभी ।
हुक्काम के सलाम को जाता जरूर हूं ॥
खुश किसमती से राय बहादुर भी बन गया ।
और म्युनिसिपिलटी में भी जी हुजूर हूं ॥
लोगों की हाकिमों से मैं करता हूं शिकायत ।
खुफिया पुलिस का गोया मैं ज़ाहिर ज़हूर हूं ॥
पबलिक भी कुछ न कुछ है मेरा रोआब मानती ।
लीडर नहीं तो लीडरों की दुम जरूर हूं ॥
साहब ने खफा होके कहा मुझ से डेम-फूल ।
मैं गिड़ गिड़ा के बोला हाँ हाँ हुजर हूं ॥

गजल १४

मादरे हिंद त अब ऐसे बशर पैदा कर ।
कृष्ण अर्जुन की तरह लख्ते जिगर पैदा कर ॥

जो राहे रास्त से पीछे न क़दम को रक्खें।
तू हरिश्चन्द्र से फिर नूर नज़र पैदा कर॥
तुझ को आज़ाद बनाने में जो तैयार रहें।
गांधी और तिलक से तू पिसर पैदा कर॥
धर्म्म को जो न कभी हाथ से छोड़े अपने।
राना प्रताप से फिर शेरे बबर पैदा कर॥
जो तेरी लाज का हरवक्त रखें दिल में खयाल।
लाजपतराय से तू लाखों बशर पैदा कर॥
तेरी आज़ादी का पादा था लगाया जिसने।
दादाभाई से तू दो चार पिसर पैदा कर॥
जो विदेशों में भी जा तेरी तरक्की चाहें।
गोखले जैसे तू अब और बशर पैदा कर॥
जाके मैदान में जो शत्रू को दिखाएँ नींचा।
शिवाजी ऐसे तू अब और बशर पैदा कर॥
तेरी इमदाद में जो जान निछावर कर दें।
तू दयानन्द से अब सीना सिपर पैदा कर॥
प्रार्थना "चंद्र" की तुझ से है भारत माता।
हो लगन जिनको तेरी ऐसे बशर पैदा कर॥

गजल १५

यारब वतन का तुझको जिसदम खयाल होगा।
फिर दुशमनों से अपना बांका न बार होगा॥

देशी की क़सम खा लें सब रोज़गार वाले ।
फिर देखना हमारा घर मालामाल होगा ॥
भर भर जहाज़ ग़ल्ला जाए न गैर जाको ।
फिर देश में हमारे किस तौर काल होगा ॥
हिम्मत से हिंद वालो तुम अब स्वराज्य लेलो ।
जन्नत का फिर यहीं पर तुम को वसाल होगा ॥
घी दूध खूब होगा गौओं की परवरिश से ।
फिर किस तरह किसी का चेहरा निढाल होगा ॥
यह जान लोगे जिसदम है हिंद मुल्क अपना ।
देदो स्वराज्य हमको यह क्यों सवाल होगा ॥
चढ़ जायेंगे खुशी से हम दार पर रक़ीबों ।
खाना नमक हमें भी उस दिल हलाल होगा ॥
पीटेंगे पेट अपना इङ्गलैंड के जुलाहे ।
कपड़ा बनाने में जब हासिल कमाल होगा ॥
कहते हैं चुप जबाँ रख कर लेगा नोट कोई ।
अए "इन्द्र" हमदमों का ऐसा न हाल होगा ॥

गजल १६

डराते हो मुझे नादान अब क्यों जेल के डर से ।
नहीं कुछ डर रहा मुझ को रक़ीबो तेग़ो खंजर से ॥
कमर बस्ता हुआ हूं मैं वतनके वास्ते जबसे ।
समझ रक्खा है ज़्यादह चैन मैंने जेलमें घर से ॥

गिरफ़्तारी का ले वारन्ट मेरे पास आओ तो ।
ख़ुशी होगी निहायत पेश आऊँगा मैं ख़ातिर से ॥
अभी लेकर छुरी दिल चाक करके देख लो मेरा ।
रँगा हूँ क़ौम के रंग में मैं अन्दर और बाहर से ॥
राम का भक्त हूँ हुब्बे वतन क्यों कर न मुझ को हो ।
मिला है हुक्म मुझको इस तरह का अपने फ़ादर से ॥
ताल्लुक़ छोड़ दो गोरों से अए हिन्दोस्तां वालो ।
यही कहता फिरूँगा मैं वतन के हर बिरादर से ॥
न करना ख़र्च हम पर बीरता अए बीरपाल अपनी ।
नसीहत यह ही होगी हिन्द के हर एक दिलावर से ॥
हमारे इम्तहाँ के वास्ते इङ्गलैंड से भेजो ।
जो ज्यादह ज़ुल्म कर सकता हो डायर और ओडायर से ।
"इन्द्र" उठ कर खड़े होंगे नसीहत सुनके मुरदा दिल ।
मरों में ज़िंदगी आजायगी दुश्मन के फ़ायर से ॥

१७ क़ौव्वाली

लोग कहते हैं बदलता है ज़माना अक्सर ।
मरद वह है जो ज़माने को बदल देते हैं ॥
मरद क़ौमों को सबक़ योंही सिखा देते हैं ।
दिल में जो ठानते हैं कर के दिखा देते हैं
आके मैदान तरक्की में पलटने के नहीं ।
यह क़दम वह हैं जो बढ़ जायँ तो हटने के नहीं ॥

देख लें धर्म का इस क़ौम में ख़ूं बाकी है।
इन रगों में अभी ऋषियों का लहू बाकी है॥
अब ज़रा जज़बए इख़लाक़ को आला करदो।
क़ौम मरहूम की तुरबत पै उजाला करदो॥

१८ क़ौव्वाली

उन्हें यह फ़िक्र है हरदम नई तरज़े ज़फ़ा क्या है।
हमें यह शौक़ है देखें सितम की इंतहा क्या है॥
गुनहगारों में शामिल हैं गुनाहों से नहीं वाक़िफ़।
सज़ा को जानते हैं हम ख़ुदा जाने ख़ता क्या है॥
यह रंगे बेकसी रंगे जिगर बन जायगा ग़ाफ़िल।
समझ ले यासेबहरमा के मरज़ की इंतहा क्या है॥
बना बिस्मिल हूँ मैं वाक़िफ़ नहीं रस्मो शहादत से।
बतादे तू ही अए ज़ालिम तड़पने की अदा क्या है॥
चमकता है शहीदों का लहू क़ुदरत के परदे में।
शफ़क का हुस्न क्या है फूल की रंगे क़बा क्या है॥
उमीदें मिल गईं मिट्टी में दरदे ज़ब्त आख़िर है।
सदाए ग़ैब बतलादे मुझे हुकमे ख़ुदा क्या है॥

सयलप्रिंटिंग वर्कस, रेल बाजार, कानपुर

पढ़ने योग्य पुस्तकें

ख़ूनी ग़ज़लें प्रथम भाग	-)॥
ख़ूनी ग़ज़लें दूसरा भाग	-)॥
राष्ट्रीय ग़ज़बकी ग़ज़लें	-)॥
राष्ट्रीय ग़ज़लें	-)॥
गांधीकृष्ण जन्म	-)
तरानये-फ़रहत	-)॥
गुलदस्तये ग़ज़ल	-)॥
वन्देमातरम की गूंज	)॥
साङ्गीत मारशल्ला	।=)
रणभेरी	≡)
मुसाफिर भजनावली	=)
महात्मा गौतम बुद्ध	-)
सफलताकी युक्ति	।=)

पता—
राष्ट्रीय सरस्वती सदन
चावलमन्डी, कानपुर